ढाई आखर प्रेम
National Cultural Jatha
28 Sep 2023 to 30 Jan 2024
www.dhaiaakharprem.in
UTTAR PRADESH
18 - 23 Novemeber 2023

ढाई आखर प्रेम राष्ट्रीय सांस्कृतिक यात्रा के उत्तरप्रदेश पड़ाव के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व

चुखीं

उ० प्र० इप्टा की अगुवाई में **ढाई आखर प्रेम, राष्ट्रीय सांस्कृतिक यात्रा** की शुरुआत **बुंदेलखंड** में जालौन जिले के ऐतिहासिक ग्राम चुर्खी से हो रही है। जो 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के **महान नायक, क्रांतिकारी, तात्या टोपे की कर्मस्थली** रही है साथ ही साथ वहां झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सौतेली बहन गोपिका बाई के महल के ध्वंसावशेष आज भी कायम हैं जिसके संरक्षित हिस्से में आज भी उनकी चौथी पीढ़ी के मराठी वंशज रहते हैं। वह कमरा आज भी सुरक्षित है, जिसमें अंग्रेजी फौज को चकमा देकर झांसी की रानी ने एक रात गुजारी थी। चुर्खी में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर तात्या टोपे की गढ़ी को खार खाए अंग्रेज़ों ने पूरी तरह से मटियामेट कर दिया था, जो मिट्टी के टीले के रूप आज भी मौजूद हैं। चुर्खी से आधा किलोमीटर पश्चिम में तात्या टोपे की सैन्य छावनी के अवशेष और बारादरी अभी भी मौजूद है।

उरई

जालौन का जिला मुख्यालय उरई 1857 में अंग्रेज़ी फौज का सबसे बड़ा मुख्यालय रहा है। जालौन की तत्कालीन मराठा शासक ताई बाई ने अंग्रेज़ों के खिलाफ खुली बगावत की थी। कई अंग्रेज़ सैनिकों को मौत के घाट उतारा था। उरई में जिनका कब्रिस्तान आज भी मौजूद है। इसके साथ साथ यहां बारहवीं सदी के परिहार शासक माहिल के महल के अवशेष और उनके समय का ऐतिहासिक माहिल ताल यहां आने वाले पर्यटकों का आकर्षण केंद्र बना हुआ है। माहिल की सगी बहन मल्हना का विवाह महोबा राज्य के अंतिम शासक परमार्दिदेव (परमाल) के साथ हुआ था इस नाते उन्हें परमाल की सेना के **अजेय सेनापति आल्हा ऊदल**, मामा माहिल कहकर पुकारते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि माहिल ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया था। इसलिए उन्होंने न कभी तलवार उठाई और न ही किसी लड़ाई में भाग लिया। उरई के बारे में किंवदंती है कि इसे किन्हीं उद्दालक ऋषि ने बसाया था। दलित चेतना के प्रणेता मान्यवर कांशीराम ने दलित आंदोलन की शुरूआत उरई से की थी। बुंदेलखंड में उरई सांस्कृतिक, राजनैतिक चेतना के साथ-साथ सांप्रदायिक सदभाव का प्रमुख केन्द्र है।

हरदोई गूजर

1857 के क्रान्तिकारियों का गढ़ रहा है यहां के गुर्जर राजा ने झांसी की रानी ने साथ अंग्रेज़ों से युद्ध रत क्रांतिकारियों को अपने किले मे पनाह दी थी जिससे कुपित होकर अंग्रेज़ी फौज ने उनकी गढ़ी को ध्वस्त कर दिया था। इतना ही नहीं बुरी तरह क्रोधित और बौखलाये अंग्रेजों ने गढ़ी के सामने पीपल के पेड़ पर **19 क्रांतिकारियों को एक साथ फांसी पर लटका दिया था**। गांव के दक्षिण पूर्व में ध्वस्त गढ़ी के अवशेष विशाल टीले के रूप में आज भी मौजूद हैं।

कोंच

कस्बा कोंच जालौन जिले का तहसील मुख्यालय है। किंवदंतियों के अनुसार कस्बे का नाम किन्हीं क्रौंच ऋषि से जुड़ा है। लेकिन यह ऐतिहासिक युद्ध स्थली रहा है। सबसे अधिक संघर्ष 1857 में अंग्रेज़ो और क्रांतिकारियों के मध्य कोंच में हुआ। बारहवीं सदी मे जहां पृथ्वीराज चौहान और आल्हा ऊदल के बीच भयानक और निर्णायक युद्ध हुआ था वहीं 1857 के संग्राम में झांसी की रानी ने यहां अंग्रेज़ी फौज के दांत खट्टे किए थे। उल्लेखनीय है कि **यह यात्रा कामरेड ठाकुरदास वैद्य की जन्म शताब्दी को समर्पित है**। कोंच उन स्मृति शेष ठाकुरदास वैद्य की कर्मस्थली रही है। वैद्य जी न केवल स्वतंत्रता सेनानी रहे बल्कि उन्होंने सपत्नीक भूमिगत रहकर वामपंथी आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने कस्बे में तीन दशक पूर्व मथुरा प्रसाद महाविद्यालय की स्थापना की और लंबे समय तक उसके प्राचार्य रहे। वह प्रदेश में माध्यमिक शिक्षक संघ के संस्थापक सदस्य रहे। कोंच में इप्टा इकाई कायम की और आखिरी सांस तक इप्टा का मार्गदर्शन किया। वैद्य जी ने कोंच और उरई इप्टा की टीमों का नेतृत्व करते हुए एक सप्ताह तक जिले के डेढ़ दर्जन गांवों की पदयात्रा की और गांव - गांव, गली - गली इप्टा का संदेश पहुंचाया।

महेश पुरा

यात्रा का अंतिम पड़ाव, जिले का सीमांत गांव महेश पुरा जहां उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक में **महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने महीनों प्रवास कर संस्कृत का अध्ययन अध्यापन किया**। गांव के पश्चिम में पहूज नदी के तट पर उनके द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला के अवशेष आज भी कायम हैं।

राहुल सांकृत्यायन की शिक्षा स्थली महेश पुरा

दिवारी नृत्य

दिवारी नृत्य की शुरूआत बृज से होती है। ऐसा मानना है कि नंद के घर प्रत्येक वर्ष एक नृत्य उत्सव हुआ करता था। धीरे धीरे इसके प्रभाव से बुंदेलखंड भी अछूता नही रहा। दीपावली का त्योहार बुंदेलखंड में बड़े जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। दीपावली के आने से पहले ही बुंदेलखंड के गांवों, क़स्बों और बाज़ारों में दिवारी नृत्य की धूम मच जाती है। दिवारी नृत्य की खूबी है कि लोक कलाकार नगाड़ों और ढोलक की थाप पर थिरकते जिस्म के साथ लाठियों के अचूक वार के साथ अपनी भाव और भांगिमाओं से ऐसा समा बांध देतें हैं, जैसे युद्ध का मैदान जीतने निकले हों।

“ बुंदेलखंड ”

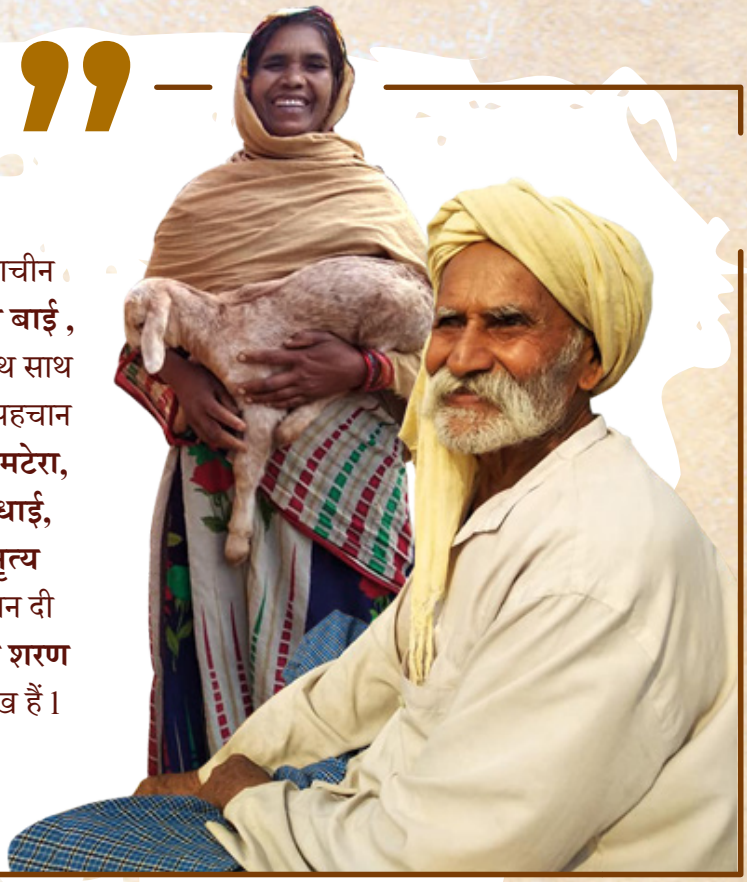

वीरों और वीरांगनावों की धरती, मध्य भारत के प्राचीन क्षेत्र बुंदेलखंड में जहाँ **आल्हा ऊदल, रानी लक्ष्मी बाई , झलकारी बाई, ताई बाई** की वीर गाथाओं के साथ साथ इस क्षेत्र के लोकगीतों और लोकनृत्यों की विशिष्ट पहचान है.यहां के प्रमुख लोकगीत हैं:-**आल्हा, फाग, लामटेरा, गारी** आदि और प्रमुख लोकनृत्य हैं:-**दीवारी, बधाई, राई, बरेदी, सैरा, कानड़ा, ढिमरयाई, नौरता नृत्य** आदि। बुंदेलखंड को विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान दी उनमें **गोस्वामी तुलसी दास, राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त और हाकी के जादूगर मेजर ध्यान** चंद प्रमुख हैं।

प्रिय साथियों,

'ढाई आखर प्रेम' राष्ट्रीय सांस्कृतिक यात्रा का जत्था जोश और उत्साह से लबरेज़ पूरी शिद्दत के साथ अपने देश व्यापी सांस्कृतिक अभियान पर निकल पड़ा है। समता, अनुराग, सौहार्द, वात्सल्य और प्रगतिशीलता हमारी ताकत है। यह सांस्कृतिक जत्था पैदल यात्रा के ज़रिये **28 सितंबर, 2023 (शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती)** को राजस्थान के अलवर से शुरू हुआ और देश के 22 राज्यों की बहुरंगी संस्कृति, लोक जीवन, साझा विरासत और समरसता को जानते-समझते और अंगीकार करते हुए **30 जनवरी 2024 (महात्मा गांधी की शहादत दिवस)** को दिल्ली में संपन्न होगा।

ढाई आखर प्रेम
National Cultural Jatha

दुनियाभर में नफरत, वैमनस्य, और तोड़ने-बांटने के इस दौर में **'ढाई आखर प्रेम'** सिर्फ प्यार बांटने निकला है। इस सांस्कृतिक उत्सव के दौरान हम नाचेंगे, गायेंगे, नुक्कड़ और मंचीय नाटक करेंगे, साहित्य, संगीत और कला के विरसे को आपस में बांटेंगे। हम 'कबीर' और 'महात्मा गांधी' के पास बैठेंगे और जानेंगे कि राम और रहीम के रंग-रस से बने धागों से 'झीनी-झीनी सी चदरिया' कैसे बुनी जाती है। परंपरा से रू-ब-रू होंगे। हम उनके जन्म और कर्म स्थली तक जाएंगे। हम गांवों और कस्बों में जाएंगे और जंग-ए-आजादी के मतवालों के प्रतीकों को सलाम करेंगे। 'ढाई आखर प्रेम' के जत्थे गंगा-जमुनी तहजीब, एकता, भाई-चारे, न्याय, समरसता और सह-अस्तित्व के ताने-बाने को फिर से बहाल करने का प्रयास करेंगे, जो विद्वेष, लालच और अज्ञानता के काले सायों में धुंधला से गए हैं।

"प्यार का जश्न नई तरह मनाना होगा
ग़म किसी दिल में सही, ग़म को मिटाना होगा"

- कैफी आज़मी

आईए, इसी संकल्प और जज्बे के साथ आप भी हमारी इस यात्रा से जुड़िये, हमसफर बनिये। साथ चलने वाला ही सिर्फ सह-यात्री नहीं होता, साथ रहने वाला भी होता है। आप सोशल मीडिया पर हमारे साथ चलें। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप के जरिए हमारे नज़रिए और मुहिम को आगे बढ़ाएं। बड़ा मज़ा आएगा। नए दरीचे खुलेंगे और आप अपने भीतर ठंडी-ताज़ी और पुरसुकून हवा का अहसास करेंगे।

यात्रा के पड़ाव

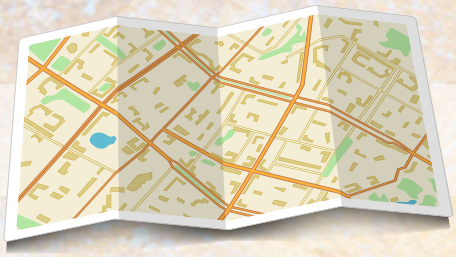

(18 नवंबर से 23 नवंबर 2023 तक)

18 नवंबर	**चुर्खी** से प्रारम्भ होकर रिनिया वैदेंपुर, सोहरापुर अदा, बैन, विनौरा वैद्य, ककहरा, औता (रात्रि विश्राम)
19 नवंबर	**औता** से गूढा , चक जगद्देपुर, उरई (रात्रि विश्राम)
20 नवंबर	**उरई** से करसान, वजिदा, मड़ोरा, बिनौरा (मिनौरा) (रात्रि विश्राम)
21 नवंबर	**बिनौरा** के विभिन्न पुर्वो / टोलो से भ्रमण करते हुए हरदोई गुजर (रात्रि विश्राम)
22 नवंबर	**हरदोई गुजर** से पनिहारा, पड़री, कोंच (रात्रि विश्राम)
23 नवंबर	**कोंच** से चमरहुवा बुजुर्ग, आशुपुरा, जगनपुरा, अवधपुरी, पची पुरी, **महेश पुरा में यात्रा का समापन**

उत्तर प्रदेश यात्रा समन्वयक

शहज़ाद रिज़वी,
राज्य महासचिव, इप्टा - उ०प्र०
फोन - 9415692469,9696945174
ईमेल : shahzadrizvi1961@gmail.com

स्थानीय यात्रा संयोजक

देवेंद्र शुक्ला,
अध्यक्ष, इप्टा - उरई, फोन - 9140284392

पड़ाव संयोजक/ प्रभारी

तुलसी राम (प्रधान),
चुर्खी, फोन - 7380903845

राजपाल सिंह उर्फ **पप्पू सिंह** (भू०पू० प्रधान),
औता, फोन - 9198812177

संत राम सिंह कुशवाहा भूतपूर्व विधायक,
उरई, फोन - 8707384365

कृपा शंकर द्विवेदी उर्फ **बच्चू महाराज**,
बिनौरा (मिनौरा) फोन - 9450296208

विजय सिंह राठौर,
हरदोई गुजर, फोन - 9450878823

अनिल कुमार वैद,
कोंच, संयोजक, इप्टा - जालौन
फोन - 9452310542, 7905382061

राम प्रकाश कुशवाहा (प्रधान),
महेश पुरा, फोन - 8953117808

Follow for updates

www.dhaiaakharprem.in

www.facebook.com/dhaiaakharprem

www.youtube.com/@dhaiaakharprem

@dhaiaakharprem2023

@dhaiaakharprem

REGISTER HERE

जत्था में शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु

यहां क्लिक करें

यात्रा संयोजक

राकेश वेदा,
राज्य अध्यक्ष एवं
राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष - इप्टा
फोन: +91 9580454601
ईमेल: rakeshveda52@gmail.com

केन्द्रीय संयोजन दल

फोन: +91 9821043733
ईमेल: dhaiaakharprem@gmail.com

सहयोग - प्रलेस, जलेस, जसम, इप्टा, साझी दुनिया, राही मासूम रज़ा एकेडमी, अमिट, नीपा, माकिंगबर्ड, दस्तक, महिला फेडरेशन, एडवा, ऐपवा, एटक, सीटू, यू पी एम एस आर ए, यूपी बैंक एम्प्लाइज यूनियन, बीमा कर्मचारी संघ, उ प्र राज्य कर्मचारी महासंघ, डी वाई एफ आई, एस एफ आई, आइसा, साझी शहादत साझी विरासत अभियान - लखनऊ